Mizoram University Journal of Humanities & Social Sciences
(A Bi-Annual Refereed Journal) Vol IV Issue 2, December 2018 ISSN: 2395-7352
eISSN:2581-6780

किन्नर समाज और 'तीसरी ताली'

'TeesariTaali' and Third Gender Society

Ms.Aradhana Shukla*
Prof. Sanjay Kumar**

Abstract

The social and life mode issues of the 'third gender' are emerging fields of academic interest in Hindi literature since the last decade in which multi-dimensional problems related to their religious and cultural beliefs, values and traditions are the subjects being highlighted. These issues appear in analytic and creative literature in the form of books and novels based on their social formations and challenges they face. Contextually, '*TeesariTaali'* is a novel centred on the social mode and manners of the third gender society written by Pradeep Saurabh in which he tries to highlight the marginalized, insulted and alienated third gender persons with valid reason and sympathy. In this novel the author attempts to cover the pain, hardships, expectations, cultural traditions, myths, customs as well as superstitions of these people and the significant aspect of his attempt is to narrate things and ideas as these appear to have happened in real life situations.

Keywords: Kinnar, Chhakka, Hizda, Chunari Rasm, Giriya, Kuvagamka Mela, Arvaan, Kinnaronki Gaddi, Gay, Lesbian

शोध-पत्र सार

पिछले एक दशक से हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन एवं समाज को लेकर एक विमर्श उभर रहा है, जिसमें किन्नर समाज के विविधोंमुखी समस्याओं और उनकी धार्मिक आस्थाओं, सांस्कृतिक मान्यताओं, मूल्यों एवं परंपराओं आदि को उजागर करने का प्रयास किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य में किन्नर समाज पर केन्द्रित कुछ रचनाएँ प्रकाश में आयीं हैं। समकालीन हिंदी उपन्यासकार प्रदीप सौरभ ने इन्हीं किन्नरों के जीवन को केंद्र में रखकर 'तीसरी ताली' नामक उपन्यास का सृजन किया है, जिसमें किन्नरों के उपेक्षित, तिरस्कृत एवं अभिशप्त जीवन

* Assistant Professor in the Department of Hindi, Mizoram University
** Professor in the Department of Hindi, Mizoram University

की दर्द भरी दासतॉं को प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया है। इस उपन्यास में लेखक ने किन्नरों के दुख-तकलीफ़ों, आशा-आकाँक्षाओं, रीति-रिवाजों, परंपराओं, मिथकों, रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों आदि को यथार्थपरक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

बीज शब्द:किन्नर,हिजड़ा, छक्का, तीसरी ताली, चुनरी रस्म,गिरिया,कुवागम का मेला, अरवाण,किन्नरों की गद्दी, हिजड़ों के गुरु,गे, लेस्बियन, उभयलिंगी यौन संबंध

इस पृथ्वी पर उपस्थित सभी जीवों में लैंगिक आधार पर दो भेद पाये जाते हैं-नर और मादा। लेकिन कुछ ऐसे भी जीव होते हैं जो इन दो वर्गों में समाहित नहीं हो पाते हैं। ये प्रकृति की विशिष्ट संरचना होते हैं।भारतीय समाज में इस तीसरे लैंगिक प्राणियों को 'किन्नर','हिजड़ा','छक्का' आदि कहा जाता है।प्राय:विश्व की सभी संस्कृतियों और समाजों में इनकी उपस्थिति पायी जाती है, भले ही इनकी संख्यानगण्य हो। यद्यपि आम मनुष्यों की तरह ये (किन्नर)भी प्रकृति की ही देन हैं, फिर भी अधिकांश मानव समाजों में इन्हें उपेक्षा भरी दृष्टि से ही देखा जाता है। भारतीय समाज में भी किन्नरों को हेय समझा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें सामान्य जीवन-यापन में विविध प्रकार की कठिनाइयों और बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जिस प्रकार पिछले दो-तीन दशकों से साहित्य में विशेषकर हिंदी साहित्य में आदिवासी-विमर्श, दलित-विमर्श एवं स्त्री-विमर्श की पुरजोर अभिव्यक्ति हुई है, उसी प्रकार पिछले एक दशक से हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन एवं समाज को लेकर भी एक विमर्श उभर रहा है, जिसमें किन्नर समाजके विविधोंमुखी समस्याओं और उनकी धार्मिक आस्थाओं,सांस्कृतिक मान्यताओं,मूल्यों एवं परंपराओं आदि को उजागर करने का प्रयास किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य में किन्नर समाज पर केन्द्रित कुछ रचनाएँ प्रकाश में आयीं हैं, जिनमें लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी की आत्मकथा-'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी',चित्रा मुद्गल का उपन्यास-'पोस्ट बाक्स नं. 203 नाला सोपरा',महेंद्र भीष्म का उपन्यास-'किन्नर कथा',नीरजा माधव का उपन्यास-'यमदीप' तथा प्रदीप सौरभ का उपन्यास-'तीसरी ताली' आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इनके साथ ही शिव प्रसाद सिंह की कुछ कहानियों में भी किन्नर जीवन की झलक दिखाई पड़तीहै। समकालीन हिंदी उपन्यासकार प्रदीप सौरभ ने इन्हीं किन्नरों के जीवन को केंद्र में रखकर 'तीसरी ताली' नामक उपन्यास का सृजन किया है, जिसमें किन्नरों के उपेक्षित,तिरस्कृत एवं अभिशप्त जीवन की दर्द भरी दासतॉं को प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया है। इस उपन्यास में लेखक ने किन्नरों केदुख-तकलीफ़ों,आशा-आकाँक्षाओं,रीति-रिवाजों,परंपराओं, मिथकों, रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों आदि को यथार्थपरक ढंग से अभिव्यक्तकिया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने तीसरी योनि में जन्में, जन्मोत्सव एवं विवाहोत्सव के अवसर पर नाच-गाकर पेट पालने वाले तथा समाज की मुख्य धारा से बहिष्कृत एवं अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर किन्नरों की आंतरिक पीड़ा को व्यक्त करते हुए समाज के साथ उनके जद्दोजहद को भी वाणी प्रदान की है। तीसरी योनि के इन प्राणियों को कभी 'किन्नर', कभी 'हिजड़ा' तो कभी 'छक्का' नाम से संबोधित किया जाता है, जैसे वे कोई जीवित इंसान न हों बल्कि कोई पशु हों। विनीता द्वारा शुरू किए गए टी.वी. सीरियल-'द छक्का' द्वारा हिजड़ों के दुख-दर्द एवं संघर्षों के साथ-साथ उनके मुकाम तक के सफर को चित्रित किया गया है।इस सीरियल में विनीता,सुप्रिया कपूर,राजू,मणि कालीता आदि पात्रों के माध्यम से संघर्षशील हिजड़ों के चरित्र को दर्शाया गया है,जो तीसरी योनि में जन्म लेकर समाज के दंश को झेलते हुए समाज में अपनी पैठ बनाते हैं। राजू अपने संघर्ष केबल पर अपनी पढ़ाई पूरी करता है और कमाथीपुरा में रहकर एड्स और संक्रमित रोगों से ग्रस्त वेश्याओं और हिजड़ों की सेवा में जुट जाता है। इतना ही नहीं वह वेश्याओं के दो बच्चों को गोद भी लेता है।वह एक एन.जी.ओ. की भी स्थापना करता है तथा न्यूयार्क में आयोजित एड्स पर केन्द्रित 'संयुक्त राष्ट्रसंघ' के एक सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व भी करता है।वह हिजड़ा समाज को संबोधित करते हुए कहता है- **"उठो और समाज में अपना मुकाम बनाओ। अपना हक हाशिल करो। हक भीख में नहीं मिलता, उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है।"**[1] राजू के इस कथन से यह भी पता चलता है कि हिजड़ों का एक वर्ग ऐसा भी है, जो परंपरागत पेशे के प्रति उपेक्षा का भाव रखता है क्योंकि नाच-गाना करने वालों एवं जन्मोत्सव आदि के अवसर पर बधाई देने वालों एवं उज्ज्वल भविष्य की दुआएँ देने वाले किन्नरों को समाज हेय दृष्टि से देखता है।

समाज तथा घर परिवार द्वारा ठुकराये जाने वाले किन्नरों के दंश को भी इस उपान्यास में चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में विजय कृष्णा मंजू से अपनी आंतरिक व्यथा प्रकट करते हुए कहता है-**"दुनिया के दंश से अपने-आप को बचाने के लिए मैंने लगातार लड़ाई लड़ी और खुद को स्थापित किया। मैं नाचना-गाना नहीं, नाम कमाना चाहता था। भगवान राम के उस मिथक को झुठलाना चाहता था, जिसके कारण तीसरी योनि के लोग नाचने-गाने के लिए अभिशप्त हैं... परिवार और समाज से बेदखल हैं।"**[2]उपर्युक्त कथन के माध्यम से लेखक ने एक तरफ किन्नरों के मानसिक दंश को दर्शाया है तो दूसरी तरफ उनकी इच्छाओं, आकांक्षाओं एवं उनकी पूर्ति हेतु उनके संघर्ष एवं उनके प्रयासों को भी दर्शाया है। अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर ही विजय,विनीता,शोभा,राजू,सुप्रिया कपूर व सोनिया आदि किन्नर समाज में अपनी खास पहचान बनाते हैं,साथ ही हिजडों के समाज में प्राचीनकाल से चले आ रहे उस मिथक को भी चुनौती देते हैं, जिसके अनुसार किन्नरों को भगवान राम का आदेश है कि वे नाच-गाकर लोगों का मनोरंजन करें तथा अपनी आजीविका चलाएँ। उस मिथक के बारे में मंजू विजय को बताती है- **"हमारे बुजुर्ग बताते**

हैं कि जब भगवान राम रावण को मारकर अयोध्या लौटे, तो वहाँ बड़ा भारी जश्न हुआ। रात भर नाच-गाना चला। काफी रात बीतने के बाद भगवान राम ने कहा कि अब सभी नर-नारी अपने घरों को जायें। भगवान राम ने यह आदेश नर और नारियों को दिया था। लिहाजा जो नर या नारी नहीं थे, वे वहीं रह गये। भगवान राम के आदेश का उल्लंघन भला वे कैसे कर सकते थे। राम तो मर्यादा पुरूषोत्तम थे। उन्हें जब यह बात पता लगी, तो उन्होंने तीसरी योनि के उन लोगों को नाचने-गाने का वरदान दे दिया। बस,तभी से ये लोग नाच-गा रहें हैं।"[3] इस उपन्यास में रेखाचितकबरी,पिंकी व सुनयना आदि के माध्यम से लेखक ने किन्नर समाज के उस वर्ग का भी वर्णन किया है जो हिजड़ों के परंपरागत पेशे को नकार कर अधिक पैसे के लोभ में वेश्यावृत्ति के धंधे में शामिल हो जाते हैं। इसी कारण रेखाचितकबरी कालगर्लका धंधा अपनाती है। उसका यह व्यापार इण्टरनेट के जरिये विदेशों तक फैला है। वह अपने यहाँ से होटलों में नवयुवक एवं युवतियों को भेजती है। वह सेक्स रैकेट गैंग की मालकिन है। इस संदर्भ में लेखक कहता है- **"रेखाचितकबरी... लंबे समय से समलैंगिक लड़कों और हिजड़ियों कि तलाश में लगी हुई थी। बाजार में ग्राहक लड़कियों कीजगह लौंण्डे मांग रहे थे।... विदेशी ग्राहक तो कमसिन लौण्डों की मुहमाँगी कीमत दे रहे थे।... रेखाचितकबरी दिल्ली के कालगर्ल सर्किट में सबसे बड़ा नाम था। उसके तार इण्टरनेशनल कालगर्ल रैकेट से जुड़े थे। उसका पूरा धंधा इन्टरनेट के जरिये होता था। ग्राहक तय करने से लेकर लड़का-लड़की पेश करने तक। सब कुछ हाईटेक।... इसी के चलते रेखाचितकबरी अपना जाल हिजडों के बीच बिछा रही थी। नाच-गाने की तुलना में यहाँ पैसा ज्यादा था। गुरू की किच-किच भी नहीं थीं। पिंकी और सुनयना इसी लालच में रेखाचितकबरी से जुड़ी थी।"**[4]

प्रस्तुत उपन्यास में न सिर्फ किन्नरों केपरंपरागत पेशे के प्रति उपेक्षा को दर्शाया गया है बल्कि हिजड़ा समाज व उनके पेशे पर गहराते संकट पर भी प्रकाश डाला गया है। एक तरफ विश्व बाजार उनके परंपरागत पेशे पर हावी हो रहा है तो दूसरी तरफ देश में व्याप्त बेरोजगारी व भुखमरी से पीड़ित मुख्यधारा के लोगों द्वारा भी उनके पेशे पर कब्जा किया जा रहा है। उपन्यास में ज्योति व राजा पेट की आग बुझाने हेतु हिजड़ा बन जाते हैं। ज्योति,जो बलिया का रहने वाला एक दलित लड़का है,अपनी बेबसी को व्यक्त करते हुयेनीलम नामक हिजड़ी,जो कि बलिया के हिजड़ों कि गुरु है,से कहता है-**"तो मैं क्या करूँ! अपने बूढ़े माँ-बाप के साथ गंगा मईया की गोद में सो जाऊं!सीता मईया की तरह धरती भी हमारे जैसे गरीबों के लिए नहीं फटती,वरना उसी में समा जाते।"**[5] ज्योति के संबंध में लेखक ने लिखा है- **"ज्योति हिजड़ा बनने पर आमादा था।... उसे अपना भविष्य हिजड़ा समाज में ही दिख रहा था।"**[6] इस संदर्भ में वह तर्क भी रखता है कि पेट की आग ने तो बड़ों-बड़ों को न जाने क्या-क्या बना देती है।ज्योति सरीखे भूख से पीड़ित लोगों द्वारा जहाँ हिजड़ा बननाकिन्नरों के पेशे में सेंध मारने जैसा है। वहीं समाज में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो स्वेच्छा से हिजड़ावृत्ति अपनाकर किन्नरों के परंपरागत पेशे पर कब्जा कर रहे हैं। उपन्यास में मुंबई के कमाथीपुरा इलाके में रहने वाले नकली हिजड़ों की पोल खोलते हुये लेखक ने लिखा है-**"यहाँ हिजड़ों की बड़ी जनसंख्या रहती है, जिनमें अधिकांश वे हिजड़े हैं,जिन्होंने अपने पुरुषांग का आपरेशन**

कराकर स्वेच्छा से हिजड़ावृत्ति स्वीकारी है। इसमें नाचने-गाने वाला एक भी नहीं है...सारे-के-सारे जिस्मानी धंधे में लगे हुये हैं।"[7]नरगिस के 'गिरिया' गोपाल के माध्यम से भी लेखक ने बाहरी दुनिया के लोगों द्वारा किन्नरों के गद्दियों पर कब्जा कर लेने का भी वर्णन किया है। गोपाल, गैर-किन्नर समाज से ताल्लुक रखता है,वह गद्दी के लिए पहले तो नरगिस के कहने पर नरगिस की गुरु चंदाबाई की हत्या करवा देता है किन्तु गद्दी की अकूत संपत्ति को देखकर वह नरगिस की भी हत्या करवा देता है और जब किन्नर समाज द्वारा उसके हिजड़ा न होने पर उसे गद्दी का हकदार नहीं बनाया जाता, तब वह गद्दी के खातिर हिजड़ा भी बन जाता है तथा हिजड़ों के तौर-तरीकों का पालन करने लगता है।इसी कारण वह 'चुनरी रस्म' एवं 'गुरु बनने' के रस्म को भी पूरा करता है। गोपाल किन्नरों को चुनौती देता हुआ कहता है-**"देखो, अब मैं हिजड़ा बन गया हूँ। देखता हूँ अब मुझे गद्दी से कौन बेदखल करता है। इसके बाद गोपाल औरत की तरह रहने लगा। नये–से-नये फैशन की साड़ियाँ पहनता।... कभी-कभी मण्डली के साथ गाने-बजाने के लिए भी निकलता। इस तरह वह गद्दी पर काबिज हो गया।"**[8]

इस उपन्यास में लेखक ने एक तरफ किन्नरों के बहुसंख्यक समाज के साथ चलने वाले उनके संघर्ष को दर्शाया है तो दूसरी तरफ किन्नर समाज में भी व्यास मतभेद व गद्दी आदि को लेकर जो संघर्ष चलता है,उसको भी यथार्थपरक ढंग से अभिव्यक्ति किया है। हिजड़ों के गुरु चंदाबाई की गद्दी के उत्तराधिकारी के संदर्भ में अपने चेलों के साथ लंबे समय से संघर्ष चलता रहता है। इस संघर्ष का कारणगद्दी की अकूत संपत्ति व प्रतिदिन की होने वाली कमाई है। इस संबंध में लेखक का कथन है **–"चंदाबाई की गद्दी पर कब्जे को लेकर उसके चेलों में लंबे समय से संघर्ष चल रहा था। दिल्ली में चंदाबाई की गद्दी सबसे बड़ी मानी जाती है। है भी। गद्दी के पास करोड़ों की जमीन-जायदाद है। गद्दी के नीचे तीन उपगद्दियाँ हैं।चंदाबाई ने एक गद्दी नरगिस के, दूसरी नीलम के और तीसरी रीना के हवाले कर रखी थी। तीनों गद्दियों के अंतर्गत बड़ा इलाका आता है।... रोज तीस-चालीस हजार की कमाई तो सबकी हो ही जाती है। कमाई का एक हिस्सा चंदाबाई को जाता था।"**[9] गद्दी की इस अकूत संपत्ति को देखकर नरगिस यह बात हजम नहीं कर पाती है कि गद्दी का हकदार नीलम को बनाया जाए।क्योंकि चंदाबाई नीलम को गद्दी का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी। इसी वजह से नरगिस अपने 'गिरिया' गोपाल के माध्यम से चंदाबाई की हत्या करवा देती है और गद्दी पर अपना अधिकार जमा लेती है तथा गद्दी की अकूत संपत्ति की मालकिन बन जाती है।उसके इस व्यवहार से नाराज होकर नीलम व रीना अपनी कमाई का हिस्सा देना बंद कर देती हैं। क्योंकि नरगिस न तो किसी की रजामंदी से गद्दी पर काबिज होती है और न तो उसकी गुरु बनने की रस्म होती है।किन्नर समाज में गद्दी का गुरु घोषित होने वाले व्यक्ति की पारंपरिक तरीके से गुरु बनने की रस्म निभाई जाती है। जब तक उस व्यक्ति की रस्म पूरी नहीं की जाती है,तब तक कोई भी किन्नर उस व्यक्ति को गद्दी का गुरु नहीं मानताहै और न ही अपनी कमाई का हिस्सा उसे देता है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने यह भी दर्शाया है कि किन्नर समाज अपने रीति-रिवाजों, मान्यताओं एवं परम्पराओं के प्रति कितने समर्पित होते हैं तथा ईश्वर पर आस्था रखने वाले होते हैं। उन्हें भी ईश्वर और अपने पीठ की गुरु संत आशामाई के कोप का भय बना रहता है। इसीलिए वे यह कोशिश करते हैं कि उनके द्वारा किसी भी प्रकार की कोई अनहोनी बात न हो। किन्नर समाज में कई प्रकार के रस्म भी निभाए जाते हैं। जैसे- गिरिया बनने का रस्म, हिजड़ा बनने का रस्म, गद्दी का गुरु बनने का रस्म इत्यादि।इन रस्मों में वे सर्वप्रथम अपने आराध्य देवी काली माँ व मुर्गेवाली माँ को चढ़ावा चढ़ाते हैं। तत्पश्चात संबन्धित रस्म को पूरा करते हैं। इन रस्मों के दौरान वे अन्य इलाकों एवं गद्दियों के किन्नरों को भी आमंत्रित करते हैं तथा भोज आदि का भी भव्य आयोजन किया जाता है। किन्नर समाज में प्रत्येक किन्नर की 'चुनरी रस्म' कराई जाती है, इसके अभाव में वे उस व्यक्ति को न तो किन्नर समाज का अंग मानते हैं और न ही उसे अपने पेशे में शामिल होने देते हैं **-"चुनरी रस्म के बिना कोई भी हिजड़ा समाज का हिस्सा नहीं बन सकता।"**[10] चाहे वह व्यक्ति किन्नर समाज का हो या गैर- किन्नर समाज का। इसी तरह किन्नरों में 'गिरिया'बनाने की भी प्रथा है। **"'गिरिया' वे होते हैं, जिन्हें हिजड़े अपना पति मान लेते हैं। उनके लिए वे आम महिलाओं की तरह करवा चौथ से लेकर पति के लिए होने वाले हर तीज-त्योहार मनाते हैं। आमतौर पर गिरिया ढोलक या हारमोनियम बजाने वाले होते हैं या फिर गरीब आदमी। समलैंगिक भी कई बार गिरिया बन जाते हैं। आमतौर पर गिरियाओं की मूंछे जरूर होती हैं। हिजड़े मूंछवालों को ही गिरिया बनाना पसंद करते हैं। मूंछों से वे उनकी मर्दानगी महसूस करते हैं और उनका अपने स्त्री होने का अहसास भी पुख्ता हो जाता है।"**[11]

इस उपन्यास में लेखक ने किन्नर समाज के उन तमाम पहलुओं पर प्रकाश डाला है जिनसे गैर-किन्नर समाज लगभग अपरिचित हैं। किन्नर लोग भी स्वयं को हिन्दू मानते हैं एवं हिन्दू धर्म के प्रचलित पर्वों और त्योहारों को मनाते हैं।जिस प्रकार हिन्दू धर्म में किसी व्यक्ति के अंतिम संस्कार के दौरान शवयात्रा निकाली जाती है,उसकी दसवीं, तेरहवीं,बरसी,श्राद्ध कर्म किए जाते हैं, उसी प्रकार किन्नर समाज में भी मृतक की शवयात्रा निकाली जाती है तथा अन्य क्रिया-कर्म भी किए जाते हैं। किन्तु इन सबके बावजूद कुछ भिन्नताएँ भी हैं। इनके समाज में किसी किन्नर की मौत पर कोई दुखी नहीं होता, अपितु वे जश्न मनाते हैं। इसके पीछे उनकी मान्यता है कि अब वह व्यक्ति तीसरी योनि से मुक्त हो गया।इसीलिए उपन्यास में अन्ना मौसी की मौत पर किसी के आंखों में आंसू नहीं दिखाई देते हैं। इस संदर्भ में लेखक ने लिखा है-**"अन्ना मौसी की मौत की खबर सुनते ही... जेल में दिल्ली भर के हिजड़े इकठ्ठा थे। किसी की आंखों में कोई आंसू नहीं था। अन्ना मौसी को मुक्ति जो मिल गयी थी। वैसे भी हिजड़ो के मरने पर उनकी बिरादरी में कोई शोक नहीं मनाया जाता। जब उनका चौथा, तेरहवीं,रोटी होती है, तब भी उनका नाच-गाना होता है।"**[12] किन्नर समाज में शव को दफनाने की परंपरा है। इनकी शवयात्रा आधी रात को निकाली जाती है तथा शव को जूतों-चप्पलों एवं डण्डों पीटते हुए श्मशान तक ले जाया जाता है। इनकी शवयात्रा के बारे में लेखक ने लिखा है- **"दिल्ली में आमतौर पर हिजड़े के शव को रात को डण्डे से मारते, उस पर चप्पल-जूते बरसाते और**

सड़क पर खींचते हुए श्मशान घाट ले जाते हैं। इस तरह शव को श्मशान ले जाने के पीछे मान्यता यह है कि मरने वाला दोबारा तीसरी योनि में जन्म नहीं लेगा।"[13] किन्नर समाज में हिजड़े शवयात्रा में शामिल नहीं होते हैं क्योंकि वे अपने को औरत समझते हैंऔर हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार औरतें श्मशान नहीं जाती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने यह भी दर्शाया है कि किन्नर समाज में जब किसी बुजुर्ग व्यक्ति के क्रिया-कर्म व श्राध्द आदि का अवसर आता है, तब उस अवसर पर शामिल होने के लिए देश के कोने-कोने से हिजडों का हुजूम नियत जगह पर पहुँचता हैऔर इस मौके पर वे आपसी समस्याओं तथा देश-दुनिया के बारे में भी बहस करते हैं।किन्नरों का यह समागम एक प्रकार का सम्मेलन होता है।किन्नरों के समागम का वर्णन करते हुए लेखक लिखता है- **"कानपुर में बेमौसम हिजड़ों की बरसात हो गयी थी।... उत्तर से लेकर दक्षिण और पूरब से लेकर पश्चिम तक के सभी हिजड़े कानपुर में जमा हुए थे।... मौका था हिजड़ों के गुरु हाजी रहमतउल्ला और उनकी शिष्या गुलाबबाई के श्राद्ध का।... जब बिरादरी में किसी मौज्जिज या बुजुर्ग की मौत होती है तो देश भर के हिजड़े एक जगह जमा होते हैं। इस मौके पर वे आपसी समस्याओं और देश-दुनिया के बारे में भी बातें करते हैं।"**[14] इस प्रकार के आयोजनों में शामिल होकर किन्नर लोग एक तरफ बिरादरी की परम्पराओं को निभाते हैं तो दूसरी तरफ पारिवारिक रिश्तों से कट जाने के दंश एवं अकेलेपन की कमी को भी दूर करते हुए नजर आते हैं। इन सम्मेलनों में वे पारिवारिक रिश्ते भी खोज लेते हैं। इस संबंध में बड़ोदरा से आई आशा देवी का कथन है-**"हमारे कोई बेटे-बेटी तो हैं नहीं कि उनकी शादी होगी तो सब इकट्ठा होंगे। हमारे तो ये आयोजन ही हैं,जहाँ हमारे सारे अरमान पूरे हो जाते हैं। सम्मेलन में हम माँ,बहन,बेटी जैसे सभी रिश्ते आपस में बना लेते हैं।"**[15] आशादेवी का यह कथन इस बात की तरफ भी संकेत करता है कि भले ही तीसरी योनि का समझकर इन्हें समाज व परिवार द्वारा त्याग दिया जाता है। इन सबके बावजूद भी इन्हें अपने परिवार से उतना ही लगाव रहता है, जितना कि एक आम इंसान को।इस उपन्यास में लेखक ने ज्योति,विनीता,निकिता,शोभा,मंजू, सोनिया आदि विभिन्न पात्रों के माध्यम से किन्नर समाज के पारिवारिक लगाव को दर्शाया है। तभी तो घर से भागी हुई विनीता को हर बुजुर्ग में अपने पिता नजर आते हैं- **"बुजुर्ग विनीता की कमजोरी रहे हैं- चाहे वह गौतम साहब हों या कांस्टेबल राज चौधरी या फिर और कोई। वह बुजुर्ग में अपने पिता को तलाशती है।"**[16] पिता से बिछुड़ने की पीड़ा को वह किसी से बाँट नहीं पाती,जिसके परिणामस्वरूप वह अकेलेपन के दंश को झेलती रहती है तथा इस दंश से उबरने के लिए वह बरगद की छाँव का सुख महसूस करना चाहती है। तरक्की की दौड़ में वह धूप छाँव सब भूल चुकी थी और अब बरगद के नीचे बैठकर अपनी थकान दूर करना चाहती थी और यह बरगद की छाँव उसके पिता गौतम साहब थे।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने गौतम साहब एवं उनकी पड़ोसन आनंदी आण्टी के माध्यम से तीसरी योनि में जन्म लेने वाले बच्चों के माँ-बाप की पीड़ा कोभी दर्शाया है। ऐसे माँ-बाप की पीड़ा उस समय और बढ़ जाती है, जब उनकी संतानों को परिवार व समाज के लोग उपेक्षा की दृष्टि से

देखते हैं तथा शिक्षण संस्थानों में भी लिंग स्पष्ट न होने के कारण उन्हें प्रवेश नहीं दिया जाता है।उन्हें यह कहकर वापस कर दिया जाता है कि यह स्कूल सामान्य बच्चों के लिए है,बीच वाले बच्चों को दाखिला देने से स्कूल का माहौल खराब हो जाता है। इसी भेदभाव के चलते न तो आनंदी आण्टी अपनी बेटी निकिता को स्कूल भेज पाती हैं और न ही गौतम साहब विनीत उर्फ विनीता को स्कूली शिक्षा दिला पाते हैंऔर अंत में सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव के चलते उन्हें तीसरी योनि में जन्में अपने बच्चे को स्वयं से दूर कर देना पड़ता है।

प्रस्तुत उपन्यास में किन्नर समाज के धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों के बारे में भी विस्तार से बताया गया है। तमिलनाडु के कुवागम नामक छोटे से गाँव में किन्नरों का यह उत्सव मनाया जाता है। जहाँ पर सभी किन्नर प्रत्येक वर्ष जाते हैं और वहाँ अपनी सुहागन होने की रस्म भी पूरी करते हैं। यह मेला प्रत्येक वर्ष वसंत के बाद चित्र पूर्णिमा के दिन चित्रांगदा एवं अर्जुन के पुत्र अरवाण की याद में मनाया जाता है। देश के कोने-कोने से हिजड़े कुवागम के मेले में शामिल होने के लिए आते हैं। एक प्रकार से यह उनका तीर्थस्थल है। जहाँ पहुँचकर प्रत्येक हिजड़े की मनोकामना पूरी होती है, ऐसी उनकी मान्यता है। 17दिनों तक चलने वाले इस मेले में विभिन्न प्रकार के आयोजन होते हैं तथा प्रत्येक दिन गाना-बजाना होता है, बकरे की बलि दी जाती है। इन विभिन्न आयोजनों में एक दिन कथा-वाचन का आयोजन भी किया जाता है। इस आयोजन में प्रत्येक किन्नर की भागीदारी होती है क्योंकि यह उनकी परंपरा का अंग है क्योंकि कथा न सुनने पर कुवागम की यात्रा अधूरी मानी जाती है। इसमें कथा वाचक मेले के महात्म्य का विस्तार से वर्णन करता है। मेले के अंतिम दिन किन्नरों के सुहागन बनने,मंगलसूत्र तोड़ने एवं विधवा बनने की रस्म होती है जिसमें प्रत्येक किन्नर अरवाण की मूर्ति के साथ विवाह करके एक दिन के लिए सुहागन बनती है। तत्पश्चात मंदिर के पुजारी द्वारा उनके मंगलसूत्र को तोड़कर उनकी विधवा होने की रस्म पूरी की जाती है। इस अवसर पर वे विलाप करतीहैं।इस रस्म के संदर्भ में लेखक ने लिखा है- **"मंगलसूत्र तोड़ने का रस्म जारी था।... मंगलसूत्र कटते ही सुहागिनें विलाप में जुट जाती थीं।... हजारों महिलाएं एक साथ विलाप कर रही थीं।... कोई सुहागिन अपने बालों में लगे गजरे तोड़कर बिखेर रही थी। कोई मांग में भरा सिंदूर तो कोई माथे की बिंदिया पोंछकर अपने को परंपरा के अनुसार विधवा बना रही थी।"**[17] इस रस्म के पीछे उनकी मान्यता है कि स्वर्ग में रहकर अरवाण वर्ष भर उनकी रक्षा करेंगे।

'तीसरी ताली' उपन्यास में जहाँ एक ओर देश के कोने-कोने में रह रहे किन्नरों के रीति-रिवाजों,परम्पराओं, मतों-मान्यताओं ,विधि-निषेधों आदि का यथार्थपरक चित्रण किया गया है।वहीं दूसरी ओर उनके समाज में व्याप्त मत-भिन्नता को भी दर्शाया गया है। यह मतभेद किन्नरों के राजनीति में प्रवेश को लेकर है। किन्नरों का एक वर्ग देश की राजनीति में किन्नरों की भागीदारी को महत्वपूर्ण मानता है तो दूसरा वर्ग इस भागीदारी से अपने परंपरा के खत्म होने के भय से डरता है। उपन्यास में भोपाल के किन्नरों द्वारा देश की राजनीति में उनकी हिस्सेदारी को अनिवार्य माना गया है। इस संदर्भ में वे तमाम दलीले भी रखते हैं तथा इसका विरोध करने वालों को वे देश की सरकार द्वारा अपने साथ किए जाने वाले भेदभावपरक व्यवहार से भी अवगत कराते हैं। इस संदर्भ में

शबनम अपनी राय स्पष्टता के साथ रखती हुई कहती है-"**अपनी ही बिरादरी के कुछ लोग अब भी हाशिये में रहना चाहते हैं।... बस इतना ही चाहती हूँ कि लोग हिजड़ों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करें। हमें लोगों के बीच जाकर बताना होगा कि हम असली हिजड़े नहीं हैं। असली हिजड़े तो वे हैं जो जनता के वोटों से संसद और विधानसभा में जाकर उन्हीं का खून चूसने की योजनाएँ बनाते हैं और अपना पेट भरते हैं। हमें अपनी पार्टी बनानी होगी। हमारी पार्टी का नाम होगा-तीसरी पार्टी और नारा- नकली को परखा,अब असली को परखो।"**[18]

यहाँ पर लेखक ने न सिर्फ इनकी राजनीति के प्रति जागरूकता को दर्शाया है, अपितु विधानसभा के चुनाव में इनकी भागीदारी तथा आमजनता के समर्थन और उनकी जीत को भी शबनम के माध्यम से दर्शाया है-"**देश की किसी विधानसभा में पहली बार कोई हिजड़ा अगर विधायक बना था तो वह थी शबनम मौसी। उनका विधायक बनना भारतीय राजनीति और वर्षों से सामंती ताने-बाने में अकड़े-जकड़े समाज के लिए कोई मामूली घटना नहीं थी। जिन हिजड़ों को भारतीय समाज दया,उपेक्षा और इन सबसे बढ़कर घृणा का विषय मानता हो,उन्हीं में से एक को जब लाखों लोग अपना प्रतिनिधि चुन लें,तो इसे किसी भी हालत में आम घटना नहीं माना जा सकता है।"**[19] इस प्रकार शबनम मौसी का पूरे अठारह हजार वोटों से चुनाव जीतना भारतीय राजनीति में एक तरह का नया अध्याय जोड़ता है। किन्नरों का एक दूसरा वर्ग भी है जो यह मानता है कि हम राजनीति में घुस जाएँगे तो शादियों में गाना कौन गाएगा!राजनीति तो पाँच साल ही काम देगी फिर तो हमें तालियाँ ही बजानी है।राजनीति में शामिल होने वाली शबनम मौसी का उदाहरण देते हुए चेन्नई से आयी हिजड़ों की गुरु कलावती कहती है- **"उसकी विधायकी धरी-की-धरी रह गई। चुनाव में हारने के बाद अब पेट भरने के लिए तालियाँ ही पीट रही है।"**[20] इसी वजह से इलाहाबाद से आई रम्मोबाई कहती है-**"हमें अपनी परंपरा का पालन करना चाहिए।... हमें राजनीति से कोई लेना देना नहीं है।"**[21] परंपरावादी किन्नर समाज सरकार द्वारा समलैंगिकों के हितार्थ संविधान की धारा 377 को अवैध घोषित किए जाने पर भी आपत्ति जाहिर करते हैं।उनका तर्क है-"**अगर सरकार धारा 377 जैसे कानून को अवैध घोषित कर देगी, तो लोग बच्चा पैदा करना बंद कर देंगे। ऐसे में हमारे पेट पर लात पड़ जाएगी।... हमारा पेशा ही खत्म हो जाएगा। सम्मेलन की आयोजक मीना बुआ का कहना था कि समाज में आदमी आदमी से और औरत औरत से खुल्लम-खुल्ला प्यार-मोहब्बत करेंगे तो समाज का क्या होगा! हम तो भगवान के मारे हैं,लेकिन ऐसा तो हमारे समाज में भी नहीं होता!"**[22]

इस उपन्यास में लेखक ने किन्नर जीवन की विविधोंमुखी समस्याओं एवं उनके रीति-रिवाजों व परम्पराओं की झाँकी तो प्रस्तुत ही की है साथ-ही-साथ गे, लेस्बियन, उभयलिंगी यौन संबंधी समस्याओं पर भी विभिन्न पात्रों- सुविमल भाई,अनिल,वैभव,यासमीन,ज़ुलेखा आदि के माध्यम से प्रकाश डाला है।सुविमल भाई व वैभव के माध्यम से पुरुषों के समलैंगिक यौन संबंध को

दर्शाया गया है तो यासमीन एवं जुलेखा के माध्यम से स्त्रियों के समलैंगिक यौन संबंध को दर्शाया गया है। अनिल के माध्यम से उभयलिंगी यौन संबंध को दर्शाया गया है।

'तीसरी ताली' उपन्यास हिंदी साहित्य का पहला व अकेला उपन्यास है, जो जेंडर को लेकर समाज में मौजूद अलगाव को दर्शाता है, साथ-ही-साथ इन यौन विकृतताओं से ग्रसित व्यक्ति की आंतरिक पीड़ा को भी मुखरित करता है। इस संदर्भ में आधुनिक हिंदीआलोचक सुधीश पचौरी की टिप्पणी है- **"समकालीन बहुसांस्कृतिक दौर के 'गे','लेस्बियन','ट्रांसजेंडर' अप्राकृत-यौनात्मक जीवन शैलियों के सीमित सांस्कृतिक स्वीकार में भी यह दुनिया अप्रिय,अकाम्य,अवांछित और वर्जित दुनिया है। यहाँ जितने चरित्र आते हैं, वे सब नपुंसकत्व या परलिंगी या अप्राकृतयौन वाले ही हैं। परिवार परित्यक्त, समाज बहिष्कृत-दंडित ये जन भी किसी तरह जीते हैं।"**[23]

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में किन्नर समाज के उन अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है जिनकी अभिव्यक्तिहिंदी साहित्य में कमतर ही हुई है। यद्यपि वर्तमान में हिंदी साहित्य में किन्नर समाज को केन्द्रित करके कुछ रचनाएँ प्रकाश में आयी हैं,किन्तु जिस प्रकार प्रदीप सौरभ के उपन्यास 'तीसरी ताली' में किन्नर जीवन की यथार्थपरक अभिव्यक्ति हुई है वैसी अभिव्यक्ति यथार्थवादी शैली में अभी तक लगभग नहीं के बराबर हुई है। 'तीसरी ताली' उपन्यास के माध्यम से लेखक ने किन्नर समाज के दु:ख-दर्द, आशा-आकाँक्षा, रीति-रिवाज, परंपरा, मान्यताओं, मिथकों एवं रूढ़ियों आदि के चित्रण के साथ-ही-साथउनके समाज एवंअस्तित्व पर गहराते संकट पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। इस उपन्यास में आजीविका हेतु उनकी जद्दोजहद एवं उनके सामाजिक व राजनीतिक संघर्ष को भी चित्रित किया है। गैर-किन्नर समाज द्वारा किन्नरों के विविधोंमुखी शोषण का भी यथार्थपरक चित्रण किया गया है। घर-परिवार व समाज से तिरस्कृत, वंचित एवं अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर किन्नरों की स्वयं के अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूकता को भी दर्शाया गया है। यदि 'तीसरी ताली' उपन्यास को 'किन्नर समाज का दर्पण' कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2018, पृष्ठ संख्या-176
2. वही,पृष्ठ संख्या-194
3. वही,पृष्ठ संख्या-165

4. वही,पृष्ठ संख्या-78-80
5. वही,पृष्ठ संख्या-56-57
6. वही,पृष्ठ संख्या-57
7. वही,पृष्ठ संख्या-176
8. वही,पृष्ठ संख्या-106
9. वही,पृष्ठ संख्या-99
10. वही,पृष्ठ संख्या-45
11. वही,पृष्ठ संख्या-44
12. वही,पृष्ठ संख्या-147
13. वही,पृष्ठ संख्या-147
14. वही,पृष्ठ संख्या-133-134
15. वही,पृष्ठ संख्या-134
16. वही,पृष्ठ संख्या-119
17. वही,पृष्ठ संख्या-181
18. वही,पृष्ठ संख्या-139
19. वही,पृष्ठ संख्या-138
20. वही,पृष्ठ संख्या-135
21. वही,पृष्ठ संख्या-135
22. वही,पृष्ठ संख्या-135
23. वही,पृष्ठ संख्या- फ्लैप से